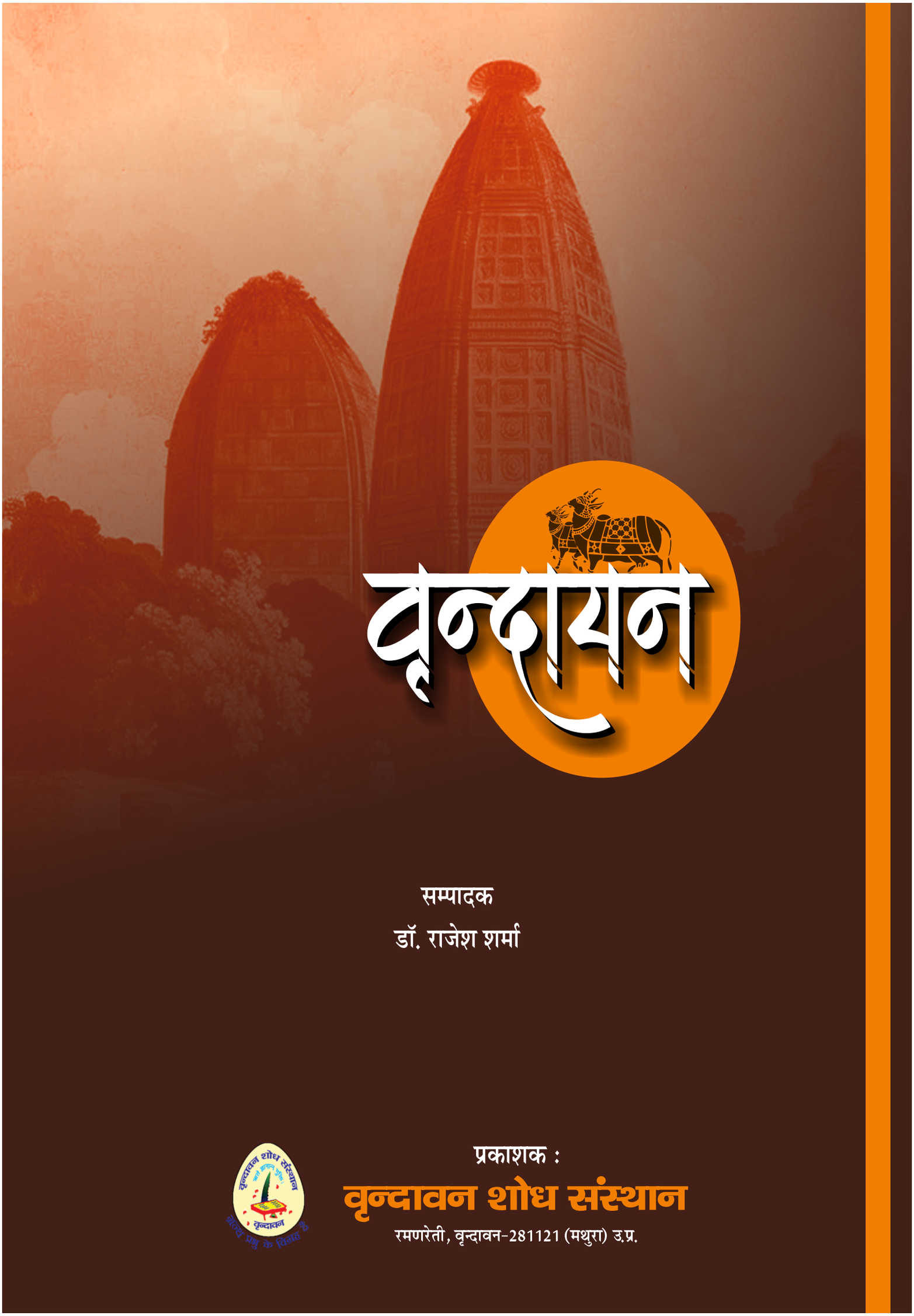

वृन्दायन

सम्पादक
डॉ. राजेश शर्मा

प्रकाशक :
वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ.प्र.

॥ग्रंथ प्रभु के विग्रह हैं॥

॥ वृन्दायन ॥

[दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं अन्य समाचार पत्र-पत्रिकाओं में
ब्रज संस्कृति पर केन्द्रित महत्वपूर्ण लेख तथा साक्षात्कारों का प्रकाशन]

[संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित]

सम्पादक
डॉ॰ राजेश शर्मा

वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन
रमणरेती मार्ग, वृन्दावन 281121 (मथुरा) उ.प्र.

प्रकाशक :

वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन-281121

E-mail : vrindavanresearch@gmail.com

ISBN : 978-81-935048-6-4

© सर्वाधिकार सुरक्षित

संस्करण - प्रथम

वर्ष 2019

मूल्य : 250/-

मुद्रक :

यमुना सिंडीकेट,

सी-254, पुष्पांजलि उपवन कॉलोनी,

लाजपत नगर रोड, एन.एच.2, मथुरा

[illegible]
[illegible]
Prabhat Lochhan Tudu
Joint Secretary
Tel: 24600 [illegible]
Fax: 24624160
E-mail: [illegible]

[illegible]

संदेश

मुझे यकायक है कि मुख्यालय लोक सरायल, गलगोटिया, मुख्यालय : अनुपुर , अब मुख्यालय के दृष्टिकोण, मुख्यालय एवं सांस्कृतिक विविधताओं का बेहतर मुख्यालय " मुख्यालय " का सकारात्मक मानने का गढ़ा है। अपनी विरासतों के माध्यम अब सांस्कृति की दृष्टिकोण आज पूरे विश्व के हैं। अब मुख्यालय की सांस्कृतिक विविधताओं पाया उनके मुझे आधारभूत अधूरे मानवों का मुख्यमंत्रालय नाम के सकारात्मक न विकास अब लोग हैं आगे वाली बहुआयु गतिविधियों के लिए। गतिविधि दीक्षा बहिन उनके कारवाह से संस्कृति के अब हैं करते का गई किसी विविधि लोक आयोजन की महत्वपूर्णता हो गयेहैं।

"मुख्यालय" अब के मंत्रालय हेतु यहाँ गतिवेद सबसे नया सकारात्मक के लिए मुख्यालय लोक सरायल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रभात लोचन टुडू)

अध्यक्षीय

ब्रज संस्कृति भारत के एक बड़े सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करती है। देश के विभिन्न अंचलों के मध्य इस पवित्र परिक्षेत्र के युग-युगीन सम्बन्धों ने अलग-अलग कालक्रमों में ब्रज के महत्त्व को दर्शाने वाली जो परिभाषायें गढ़ीं, उसका विस्तार ब्रज मण्डल की गौरव गाथा अपनी तरह से कहता है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक आदि स्तरों पर प्रसारित इस गौरव गाथा ने 16वीं सदी से एक नई करवट ली। भक्तिकाल से संज्ञित यह दौर भारत के इतिहास में संस्कृति का स्वर्णिम काल ऐसे ही नहीं कहा गया। वास्तव में इस दौरान एक नये परिचय के साथ लिखी पटकथा ने देश के सांस्कृतिक चिंतन में जिस बीज का वपन किया, उसका पल्लवन नाना रूपों में अभिव्यक्त देखा जा सकता है।

सांस्कृतिक चिंतन को अभिव्यक्त करने वाली ऐसी अभिलेखीय सम्पदा के संकलन, शोध, सर्वेक्षण एवं अभिलेखन की दिशा में वृन्दावन शोध संस्थान विगत 05 दशकों से प्रयत्नशील है। संस्थान ने इस दौरान अपने स्तर पर कार्य करने के साथ ही संस्कृति प्रेमी विज्ञ जनों के सहयोग से शोध-अध्ययन के प्रवाह को इस आशय के साथ बढ़ाया है कि नई पीढ़ी भी संस्कृति के इस पवित्र यज्ञ में स्व-आहूति हेतु प्रेरित हो सकें। "वृन्दायन" शीर्षक इस ग्रंथ के माध्यम से हमारा प्रयास है कि संस्कृति के अध्ययन में जुटे विज्ञ जन ब्रज-वृन्दावन से जुड़े विविधतापरक पक्षों पर ध्यान एकाग्र करते हुए इसके विस्तार की मुहिम में सहभागिता देने के साथ ही ब्रज के गौरवशाली सांस्कृतिक परिदृश्य के संरक्षण की दिशा में आगे आयें। संस्थान की शोध परिकल्पना वृहद एवं व्यापक है जिसमें ब्रज स्वयं को एक नई शोध दृष्टि के साथ बहुविधि अभिव्यक्त करता है। इस अभिव्यक्ति को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आकार करने में जुटे सभी विज्ञजनों को मंगलकामनायें...।

आर.डी.पालीवाल
अध्यक्ष,
वृन्दावन शोध संस्थान

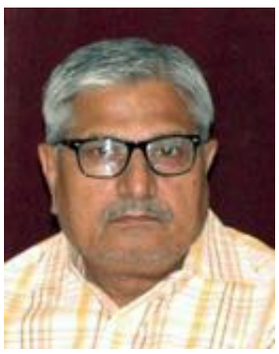

प्रकाशकीय

ब्रज-वृन्दावन के सांस्कृतिक गौरव का पुनः-पुनः चिंतन और इसके परिणामस्वरूप फलित विषय-उप विषयों को विज्ञ-जनों के मध्य कार्यशाला-संगोष्ठी एवं व्याख्यान आदि के माध्यम से प्रसारित करते हुए प्रकाशन तक लाना संस्थान के प्रमुख उद्देश्यों में एक है। इस उद्देश्य के निमित्त वृन्दावन शोध संस्थान विगत 05 वर्षों से जुटा है। 5 दशकों की इस अवधि में संस्थान ने इस दिशा में जो उपलब्धियाँ अर्जित कीं, वह भारतीय संस्कृति के अध्ययन में अपना स्थान रखतीं हैं। वृन्दायन शीर्षक के साथ यह सामग्री शोध अध्येताओं के मध्य पुस्तकाकार रूप में इस आशय से समर्पित है कि हम परिचर्चाओं के विस्तार हेतु एक समृद्ध पटल तैयार कर सकें। 'वृन्दायन' के रूप में ब्रज संस्कृति की विविधताओं पर केन्द्रित इस संकलन के प्रकाशन में सहयोगी रहे दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं अन्य पत्र-पत्रिकाओं के प्रतिनिधि विज्ञजनों का हार्दिक आभार व्यक्त करने के साथ ही इसके सम्पादन, प्रकाशन एवं मुद्रण में सहयोगी रहे सभी सुधीजनों का हृदय से आभार। आशा है संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों के लिए यह प्रकाशन उपयोगी होगा।

सतीशचन्द्र दीक्षित
निदेशक,
वृन्दावन शोध संस्थान

प्राक्कथन

आज वृन्दावन की चर्चा होते ही ध्यान, सीधे ऐसे पवित्र नगर की ओर केन्द्रित होता है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने राधारानी एवं गोपिकाओं के साथ महारास किया तथा अपने बाल सखाओं के साथ नाना प्रकार की लीलायें कीं, इसी के साथ वृन्दा अर्थात् तुलसी का वन होना भी इस पवित्र स्थली की अपनी एक व्याख्या है। वर्तमान में वृन्दावन का यह बहुप्रचलित परिचय इसी रूप में इसे देश-विदेश में रेखांकित करता है। इस परिप्रेक्ष्य में अगर हम ब्रज के द्वादश वनों में एक, युगल सरकार की रासस्थली वृन्दावन की पूर्व-पीठिका पर गौर करें तो आज मंदिरों का नगर कहे जाने वाले वृन्दावन में इस वन की अधिष्ठात्री 'वृन्दादेवी' के सन्दर्भ में वह जानकारियाँ सहज सुलभ नहीं होतीं, जिनका यशगान करने वाले विविधतापरक सन्दर्भ मूर्त-अमूर्त रूपों विविधताओं के साथ अलग-अलग कालक्रमों में अभिव्यक्त होते रहे। विक्रम की 16वीं सदी में यहां आये, भक्ति के जिन आचार्य-साधकों ने हमें वन-वृन्दावन की राह दिखाई, वह हमें आज भी वन-वृन्दावन की शीतल-सुखद लता गुल्मों के मध्य से जाने वाला मार्ग सुझाती है, जहां प्रत्यक्ष विराजित हैं - स्यामा-स्याम। यह राह हमें सीधे वन देवी-वृन्दा का कृपा प्रसाद प्राप्त कराते हुए युगल सरकार की नित्य विहार स्थली के पवित्र धरातल पर ला खड़ा करने में समर्थ है। वास्तव में यही वो धरातल है, जहाँ से प्राणी के हृदय में यह भाव स्वत: उपजता है-

जनम-जनम मोहि दीजियौ श्री वृन्दावन वास...।

जन्म से मृत्यु पर्यन्त वृन्दावन में निवास की भावना के इस संस्कार ने वृन्दावन को पहिचान दी, वह वृन्दा के इस पवित्र वन से जुड़े उस महात्म्य को बताती है जिसे समझने और ग्रहण करने की कुंजी हमें यहाँ के साधक-आचार्यों ने दी है। वास्तव में इस कुंजी को प्राप्त करने की अभिलाषा में ही जयदेव, मीरा, नामदेव, नानक, करमैतीबाई जैसे भक्ति के सूरमा भक्त-साधक इस पवित्र वन में दौड़े चले आये। वृन्दावन को देखने और अनुभव करने की दृष्टि भी देशकाल और वातावरण के अनुसार बदली सी दिखती है। दृष्टिकोंण के बदले मायनों से इस वृन्दावन ने क्या खोया और क्या पाया ? का रेखांकन इस सन्दर्भ में सुलभ अभिलेखीय सामग्री की रोशनी में अपनी बात, अलग अन्दाज में कहता है।

वृंदावन के प्रति श्रद्धा और आकर्षण का विस्तार ब्रज और भारत के आंचलिक समन्वय की कथा भी अपनी तरह से कहता है। इस कथा के विभिन्न अध्यायों को ब्रजवासी साधकों ने अलग- अलग कालावधियों में जिन विविधताओं के साथ गुंथित किया, उसकी व्याप्ति गहरे तक है। श्रीकृष्ण से अभिप्रेत इस गहरेपन का विस्तार आज अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर देखा जा सकता है। इस व्याप्ति से जुड़े विहंगावलोकन के प्रस्तुतिकरण की दिशा में, वृन्दावन शोध संस्थान एक नई दृष्टि के साथ तत्पर है। यद्यपि इतना आसान भी नहीं प्रभु कथा को साधना। हरि अनंत, कथा अनन्ता... अभिलाषा है- 'वृंदायन' का यह क्रम चलता ही रहे, विविधताओं के साथ। यही भाव तो रहा है संस्थान का, अपनी अर्द्ध सदी की यात्रा में।

डॉ.राजेश शर्मा
संपादक

विषय सूची

- अभिमत III
- अध्यक्षीय IV
- प्रकाशकीय V
- प्राक्कथन VI
- भक्तिकाल के मूल साहित्य का ठौर है वृंदावन की संकरी गलियां 1
- यहाँ विग्रह का साकार रूप ले रहे ग्रंथ 2
- ब्रज संस्कृति के संरक्षण को कटिबद्ध वृंदावन शोध संस्थान 3
- हिंदी साहित्य के उत्थान में हमेशा ही आगे रहा ब्रज 4
- कला, साहित्य और संस्कृति का संगम वृन्दावन शोध संस्थान 5
- ब्रज संस्कृति को सहेजने में लगा एक संस्थान 6
- संस्कृति की भूमि पर सभ्यता के मोती 7
- राधे ! जनम-जनम मोहे दीजो श्री वृंदावन वास 8
- वृन्दावन की भूमि में, मरिवौ मंगल आहि... 9
- गुरू के जाते ही मूंद ली थीं आंखें 10
- सदियों पुराने मंदिरों से सजा तीर्थ है वृंदावन 11
- यहाँ आध्यात्मिक संविधान में हरीतिमा से लगाव12
- कभी हरा भरा द्वीप था वृंदावन 13
- ठाकुरजी की इच्छा से फंसी थी व्यापारी की नौका 14
- यमुना की यात्राओं ने बसाए गांव, बनाए मंदिर 15
- रियासतकाल में भी बना था वृंदावन में यमुना रिवर फ्रंट 16
- विश्वविद्यालय से कम नहीं थी राधा दामोदर की पुस्तक ठौर 17
- वृंदावन की पुस्तक ठौर के यूरोपियन भी कायल 18
- सात समंदर पार गोपीचंदन की दीवानगी 19
- दुनिया जपेगी ब्रज की कंठी, पहनेगी माला 20
- कंठी की डगर को संस्कारों से सींचा 21
- वृंदावनी लोई हुई बिसरे दिनों की बात 22
- स्वामी दामोदर को खुद दर्शन देने आईं यमुना मैय्या 23
- वृंदावन के गोमा टीले पर थी भागवत की प्रथम पाठशाला 24
- तुलसी लखि रूचि दास की, कृष्ण भए रघुनाथ 25
- पहलवानों पर भारी पड़ेगी लट्ठे की 'चुनौती' 26
- कार्तिक मास में वृंदावन बना वैश्विक ग्राम 27
- कार्तिक मास में आकर्षण का केन्द्र बना वृंदावन 28
- भारतीय मोनालिसा थीं बणी-ठणी 29
- बनी ठनी ने रची थी प्रेम की नई परिभाषा 30
- वृंदावन में रमे थे वीर हेमू के पिता पूरनदास 31
- 15-16वीं सदी में भी देश-देशांतर के, केंद्र में रहा वृंदावन 32
- उत्तर भारत का प्रथम दिव्य देश वृंदावन का रंगजी मंदिर 33
- रंगनाथ ने मोहिनी रूप में दिए दर्शन 34
- ब्रिटिशकाल भी लोकप्रिय थी मंदिर की आतिशबाजी 35
- जहां पाया ही नहीं, गाया भी जाता है प्रसाद 36
- प्रसाद के लेखन, गायन ने ब्रज को बनाया खास 37
- मंदिरों में खुशबू बिखेरेंगी अद्भुत सांझी 38
- श्रीनाथ जी संग श्रीनाथद्वारा पहुंची सांझी 39
- मंदिरों तक सीमित ब्रज की प्राचीन सांझी कला 40
- ब्रजवासियों से किशनगढ़ नरेश ने साझा की सांझी 41
- अद्भुत है ब्रज का सांझी मनोरथ 42
- फूल बंगले आज भी बोलते हैं सदियों पुरानी शब्दावली 43
- साहित्य ने भी गढ़े फूल बंगला 44
- समाज गायन में गूंज रहे बधाई के पद 45
- अब होली के रंगों में नहीं रही, चोबा, अगरू और अरगजा की महक 46
- फागोत्सव में झूमते थे मुहम्मद शाह रंगीला 47
- ब्रज की होरी के रंगन नै मिटायौ मजहब कौ भेद 48

दैनिक जागरण

भक्ति काल के मूल साहित्य का ठौर हैं वृंदावन की सकरी गलियां

मथुरा, गुरुवार
23 अप्रैल 2020
नगर
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 12

दैनिक जागरण

भक्ति काल के मूल साहित्य का ठौर हैं वृंदावन की गलियां

लॉकडाउन में पूरी कर दी दो दुरुस्ती

सबरंग

दैनिक जागरण

ब्रज संस्कृति के संरक्षण को कटिबद्ध

वृंदावन शोध संस्थान

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
शुक्रवार, 14 सितम्बर 2018, आगरा, पांच प्रदेश, 21 संस्करण
www.livehindustan.com

हिंदी साहित्य के उत्थान में हमेशा ही आगे रहा ब्रज

हिंदी दिवस विशेष

मथुरा, बुधवार 15 अगस्त 2018
दैनिक जागरण

ब्रज संस्कृति को सहेजने में लगा एक संस्थान

वृंदावन शोध संस्थान में हैं ब्रज से जुड़ी दुर्लभ पांडुलिपियां

जागरण संवाददाता, वृंदावन: ब्रज और महाप्रभु वृंदावन की ठौर में वाकहाल है तो वृंदावन शोध संस्थान ही वह जगह है। यहां ब्रज से जुड़ी दुर्लभ पांडुलिपियां मौजूद हैं। इन्हीं पांडुलिपियों से पता चलता है कि वृंदावन के समकालीन करीब आठ दर्जन लोग इसी नाम से लिख रहे थे। यहीं नहीं ब्रज मुद्रण प्रणाली के विकास तक पांडुलिपि निर्माण का बड़ा केंद्र रहा।

ब्रज की सांस्कृतिक विरासत को बचाने में वृंदावन शोध संस्थान बड़ा काम कर रहा है। इस संस्थान के लिए पुस्तकों का क्या महत्व है वह उनके ध्येय वाक्य 'ग्रंथ प्रभु के विग्रह हैं' से समझा जा सकता है। वृंदावन शोध संस्थान की स्थापना सन 1968 में बिहार पंचमी को स्व. डॉ. रामदास गुप्त ने लोई बाजार स्थित हनुमान कानी धर्मशाला में की

रमणरेती मार्ग स्थित वृंदावन शोध संस्थान

थी। डॉ. रामदास गुप्त स्कूल ऑफ ईस्टर्न एंड अफ्रीकन स्टडीज लंदन यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर के साथ ही एक श्रेष्ठ कवि भी थे।

संस्थान अपना स्वर्ण जयंती वर्ष भी मना रहा है। संस्थान का उद्देश्य प्राचीन पांडुलिपियों, पुरातत्व महत्व की वस्तुओं एवं ब्रज संस्कृति से संबंधित लोक पारंपरिक धरोहरों का संरक्षण करना है। वर्तमान में रमणरेती स्थित इस संस्थान का ग्रंथागार विशेष है। हिंदी, बंगला, संस्कृत, गुरुमुखी एवं उड़िया सहित की लगभग 30 हजार पांडुलिपियां यहां हैं। यहां चैतन्य संप्रदाय की पांडुलिपियां, बादशाह अकबर सहित मुगली शासकों के फरमान, मध्यकालीन विभिन्न रियासतों के ब्रज के मंदिरों को दिए गए दान-पत्र, संकल्प-पत्र, उत्तराधिकार-पत्र एवं प्राचीन कागजी अभिलेख इस संग्रहालय में मौजूद हैं। आयुर्वेद, ज्योतिष, पट-चित्र, उर्दू एवं फारसी की तमाम पांडुलिपियां भी हैं। संस्थान के संदर्भ पुस्तकालय में हिंदी, बंगला, उड़िया, गुजराती, गुरुमुखी, अंग्रेजी, उर्दू एवं फारसी आदि भाषाओं की 18 हजार मुद्रित पुस्तकों के साथ ही विभिन्न शब्दकोश एवं शोध ग्रंथ संगृहीत हैं। संस्थान के निदेशक सतीश चंद दीक्षित बताते हैं कि संस्थान के ग्रंथों का डिजिटलाइजेशन कर उन्हें ऑनलाइन किए जाने की योजना है। संस्थान के सह संपादक डॉ. राजेश शर्मा बताते हैं कि ब्रज संस्कृति से जुड़े विभिन्न विषयों पर 36 शोधपरक पुस्तकें तथा हिंदी, संस्कृत ग्रंथों के सूची पत्रों का प्रकाशन किया जा चुका है। इनमें कई दुर्लभ पांडुलिपियों का संकलन भी है। ब्रज संस्कृति के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सांगीतिक एवं कला-परम्पराओं का परिचय कराना यहां एक अलग अनुभव है। यहां पुरातात्विक महत्व की पांडुलिपियों के अलावा, पेंटिंग्स, सिक्के, शासकीय फरमान, एवं ब्रज की पारम्परिक पोशाकें, प्राचीन वाद्य यंत्र व अन्य कलात्मक वस्तुएं प्रदर्शित हैं।

दैनिक जागरण

28.3.2019

सबरंग

संस्कृति की भूमि पर सभ्यता के मोती

कला, साहित्य और संस्कृति का संगम

वृंदावन शोध संस्थान

वर्ष 3 अंक 309
पृष्ठ 22+4=26
मथुरा, रविवार
23 अप्रैल 2017
नगर
मूल्य ₹ 4.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

राधे। जनम-जनम मोहे दीजो श्री वृंदावन वास

सौभाग्य

वृंदावन की उपासना और इसके प्रति समर्पण की भावना को लेकर जो दृष्टि गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु ने 16वीं सदी में दी, वह आज तक सुधी साधकों के भजन और जीवन पद्धति का आधार बनी हुई है।

राधाबल्लभ सम्प्रदाय में वृन्दावन मात्र कोई भौगोलिक क्षेत्र या नगरीय संरचना नहीं, प्रभु की नित्य विहार स्थली के रूप में एक ऐसा संस्कार है; जिसके साथ यहाँ के साधक मृत्युपर्यन्त जीते हैं। कालान्तर में यही भाव रसिकों की रहनि-सहनि का आधार बना-

जे नर वृंदावन विपिन तजि, अनत ही मन ले जात।
कंचन तजि गहि कांच कौ, फिर पाछै पछितात ॥

- ध्रुवदास जी

मथुरा, गुरुवार
26 अप्रैल 2018
नगर*
मूल्य ₹ 3.00
पृष्ठ 16

दैनिक जागरण

जयंती

वृंदावन को भक्ति की एक नई दृष्टि दी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु ने, लता, पताका, फूलडोल पर उनका है गहरा प्रभाव

वृन्दावन की भूमि में, मरिवौ मंगल आहि...

श्रीहितोत्सव पर विशेष

जागरण संवाददाता, मथुरा: वृंदावन में भक्ति का नया सूत्रपात्र करने वाले हरित्रयी में शामिल श्रीहित हरिवंश जी ने ही शायद सबसे पहले ब्रज की भूमि में प्राण त्यागने को मंगल कहा। वृंदावनी उपासना ने लता, पताका, फूलडोल जो कुछ भी है उस पर उनका गहरा प्रभाव है। उन्हें साहित्यकारों ने ब्रजभाषा का जयदेव भी कहा है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय में वृंदावन मात्र कोई भौगोलिक क्षेत्र या नगरीय संरचना नहीं। यह प्रभु की नित्य विहार स्थली के रूप में है। गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु का जन्म ब्रजमण्डल के बाद ग्राम में वि.सं.1559 को वैशाख शुक्ल एकादशी के दिन हुआ। गुरूवार को उनकी जयंती है। वृन्दावन आने के बाद ठाकुर श्री राधाबल्लभलाल की सेवा में रत होकर महाप्रभु ने भक्ति के जो अभिनव आयाम स्थापित किए, वह साधकों के लिए आज भी प्रेरणास्रोत हैं। राधाबल्लभ संप्रदाय साहित्य में गो. हित हरिवंश महाप्रभु का जन्म उत्सव हितोत्सव के रूप में लोकप्रिय है। ब्रजभाषा साहित्य जगत में इस उत्सव की अपनी विशेषता है। यहां महाप्रभु के जन्म पर केन्द्रित बधाई गान के पदों की समृद्ध परंपरा है। पिछले लगभग 400 वर्षों में यहां सैंकड़ों वाणीकारों ने इस विषय पर अद्भुत साहित्य रचा।

ब्रज संस्कृति विश्वकोष के सह-संपादक डॉ. राजेश शर्मा बताते है कि गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु लिखित पत्र जो सम्प्रदाय साहित्य में 'श्रीमुख पत्री' से संज्ञित है से ज्ञात होता है कि महाप्रभु ने अपने शिष्य वीठलदास को वृन्दावनी रज को 'श्याम वन्दिनी विहार चन्दन' सम्बोधित करते हुए इसके महत्व के बारे में बताया। वृन्दावन को जीने की कला समझनी है तो राधाबल्लभ सम्प्रदाय में वृन्दावनी उपासना को समझना होगा। मन को वृन्दावन की ओर उन्मुख करना और इस उपासना में रत होने का सूत्र यहां भक्ति साहित्य से समझा जा सकता है। गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु की ब्रजभाषा में रचना हित चौरासी मिलती है। यह महाप्रभु का ब्रजभाषा पर विशेष अधिकार ही था कि उन्हें साहित्यकारों ने ब्रजभाषा का जयदेव कहा है। महाप्रभु ने 16वीं सदी के दौरान वृंदावन में रास कुंज के रूप में रास मंडल की स्थापना की, जिसे वि. सं.1641 में गोस्वामी वनमालीदास के शिष्य भगवानदास स्वर्णकार ने पक्के रूप में बनवाया था।

गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु का प्राचीन चित्र, जिसमें उनके साथ स्वामी हरिदास एवं संत प्रवर श्री हरिराम व्यास जी दर्शित है

वर्ष 4 अंक 24
पृष्ठ 16
मथुरा, शनिवार
8 जुलाई 2017
नगर
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

गुरु के जाते ही मूंद ली थीं आंखें

जागरण संवाददाता, मथुरा: गुरु ही उनके गोविंद थे। गुरु और शिष्य में भक्ति और प्रीति इतनी प्रगाढ़ थी कि गुरु के जाते ही शिष्य ने अपनी आंखें मूंद ली। प्रण कर लिया कि अब इन नैनों से और किसी को नहीं देखेंगे। गुरु वियोग में अन्न जल त्याग दिया। साधकों ने उनका विरह शांत करने को निधिवन में रासलीला कराई। स्वामी हरिदास के समाधि के पास उनकी भी समाधि है।

गुरु-शिष्य की परंपरा में एक बड़ा नाम है बीठल विपुल का। किशोरदास के ग्रंथ निज मत सिद्धांत में भी उनका उल्लेख मिलता है। धर्मानुरागावली में प्रिया गहत कर प्रगट रास मधि तन तजि दीनों पंक्ति बीठल विपुल के त्याग और समर्पण का वर्णन करती हैं। ब्रज संस्कृति के जानकार राजेश शर्मा ने बताया कि बीठल विपुल ब्रज के साधकों में ऐसा नाम है जो गुरु भक्ति का पर्याय बना। स्वामी हरिदास के निकुंज गमन होते ही वह अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर बैठ गए। कई दिन तक अन्न जल का सेवन तक नहीं किया। साधकों ने आठवें दिन निधिवन में रास का आयोजन कराया। तब भी बीठल विपुल ने अपने नेत्र नहीं खोले। प्रभुदयाल मीतल ने अपनी पुस्तक ब्रज के धर्म संप्रदायों का इतिहास में लिखा है कि स्वामी हरिदास के बाद उनके संप्रदाय में जो अष्टाचार्य हुए हैं, उनमें बीठल विपुल प्रथम माने जाते हैं। निज मत सिद्धांत के अनुसार उन्होंने स्वामीजी से अगहन शुक्ल पंचमी को मंत्र दीक्षा ली थी और वह उनके प्रथम शिष्य थे। गोस्वामियों की मान्यता के अनुसार बीठल विपुल स्वामी हरिदास के भतीजे थे। उनके विषय में किवदंती है कि स्वामीजी के निकुंज गमन के बाद उन्होंने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली। नाभाजी कृत भक्तमाल में लिखा है कि निधिवन में बांके बिहारी का प्राकट्य हुआ था। उस समय बीठल विपुल को ही नित्य निकुंज भवन से बिहारीजी को गोद में उठाकर लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

गुरु पूर्णिमा

वृंदावन के निधिवन में स्वामी हरिदास व उनके शिष्य बीठल विपुल की समाधि

- गुरु भक्ति का पर्याय हैं बीठल विपुल
- निधिवन में स्वामी हरिदास के समीप है समाधि

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
शनिवार, 28 अक्टूबर 2017, आगरा, पांच प्रदेश, 20 संस्करण
मथुरा संस्करण www.livehindustan.com

सदियों पुराने मंदिरों से सजा तीर्थ है वृंदावन

सरकार ने धर्म रक्षा को उठाया ठोस कदम

वर्ष 3 अंक 234
पृष्ठ 20
मथुरा, सोमवार
6 फरवरी 2017
नगर
मूल्य ₹ 3.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

यहां आध्यात्मिक संविधान में हरीतिमा से लगाव

अनूठा उदाहरण है वृंदावनी पर्यावरण संचेतना, संस्कारों में था पर्यावरण का गायन व लेखन

ब्रज-वृन्दावन जहाँ पोथियाँ कह रहीं पर्यावरण की गाथा ...

जहाँ गाया भी जाता है पर्यावरण ...

स्वच्छता और पर्यावरण से जुड़ा जन जागरण आज पूरे देश में जोरों पर है। इस दिशा में कई तरह के प्रयोग हैं, कि बात आमजन तक पहुँचे। 16वीं सदी में श्रीकृष्ण की लीलास्थली वन-वृन्दावन में भक्ति के धरातल पर स्वच्छता और पर्यावरण से जुड़ा आध्यात्मिक संविधान एक स्वत: स्फूर्त प्रक्रिया थी। जिसे यहां के साधक-आचार्यो ने श्रद्धा की डोर से इतना संस्कारित किया कि पिछले लगभग 400-450 वर्षों में इसकी व्याप्ति साहित्य, कला एवं संगीत में गहरे तक दिखती है। अचरज की बात है कि इससे जुड़े प्राय: संदर्भ आज भी मुद्रण तकनीकी [Printing Technology] से पूर्व उसी युग में ठहरे है। जब वे उस दौरान पांडुलिपियों [Manuscript] के रुप में आये होंगे। 'वन निधि-वृन्दावन' सेवा प्रकल्प के माध्यम से मेरा उद्देश्य स्वच्छता और पर्यावरण अभियान से जुड़ी साहित्यिक धरोहर [Literary Heritage] को प्रकाश में लाना है, ताकि भारत ही नहीं, विश्व संस्कृति यह जान सके कि ब्रज-वृन्दावन में ये संस्कार जीये ही नहीं, लिखे-पढे और गाये भी जाते है।

वर्ष 3 अंक 248
पृष्ठ 16
मथुरा, सोमवार
20 फरवरी 2017
नगर
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

कभी हरा भरा द्वीप था वृंदावन

महाकवि कालीदास ने बताया था इसको कुबेर का चैत्ररथ उद्यान, अब बन गया कंक्रीट का जंगल

- वृन्दावन : वन से नगर तक हर युग में आकर्षण का केन्द्र

- तभी तो ब्रज से बाहर भी लोकोक्ति प्रचलित है - 'बिन्दावन बनि गयौ''

16वीं सदी में जब इस समस्या के अस्तित्व को लेकर कहीं कोई चिन्तन न था, उस दौर में यहां के साधक-आचार्यों ने वन संस्कृति से प्रेरित जिस प्रेम का शंखनाद किया वह इनकी दूरदर्शिता कम, उस श्रद्धा का धरातल अधिक प्रतीत होता है। जिसमें उनका भाव यहीं था कि वन-वृन्दावन की ये वृक्षावलियां और लता-पतायें ही उन्हें राधा-कृष्ण की भक्ति के निकट पहुंचाने में समर्थ है।

लीला स्थली वृंदावन का युग-युगीन प्रभाव ही है कि जहां लगभग 6वीं शताब्दी के दौरान संस्कृत के महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में वृंदावन को वन हरितिमा के एक आदर्श-रूप में स्थापित करते हुये इसकी तुलना चैत्ररथ के उद्यान से की- **वृंदावन चैत्ररथाद्नूने निर्विश्यतां सुंदरि यौवनश्री ...** वहीं 16वीं सदी के बाद तो इस वन संस्कृति से प्रेम के जितने उपांग यहां श्रद्धा और भक्ति के धरातल पर उपजे, उनकी व्याप्ति साहित्य, संगीत और कला रूपों में गहरे तक है। जिसकी यश गाथा सैंकड़ों पांडुलिपियों के रूप में आज भी भारतविद्या (इंडोलॉजी) की बहुमूल्य धरोहर है।

- डॉ.राजेश शर्मा

अमर उजाला

आगरा । 21 अगस्त 2016

ठाकुरजी की इच्छा से फंसी थी व्यापारी की नौका

मदनमोहन मंदिर के निर्माण से जुड़ी मान्यताएं दर्शाती हैं यमुना के जलमार्ग की समृद्धि

यमुना की यात्राओं ने बसाए गांव, बनाए मंदिर

अमर उजाला

आगरा | सोमवार | 22 अगस्त 2016

" 14 और 15वें जुलूसी वर्ष के दौरान, यमुना के रास्ते वृन्दावन होकर तीन बार गुजरा था, जहाँगीर । जलमार्ग से गुजरने के दौरान उसने एक बार वृन्दावन के मंदिर भी देखे थे... ''

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
बुधवार, 14 दिसम्बर 2016, आगरा, पांच प्रदेश, 20 संस्करण
www.livehindustan.com

रियासतकाल में भी बना था वृंदावन में यमुना रिवर फ्रंट

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

27 जुलाई 2016

पांच सौ साल पहले हुई थी स्थापना, मंदिर में लिखी जाती पांडुलिपियां

विश्वविद्यालय से कम नहीं थी राधा दामोदर की पुस्तक ठौर

प्रणति शर्मा के शोध में ताजा हुई जानकारी

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
www.livehindustan.com
09 दिसम्बर 2016

अकबरकाल में ज्ञान संपदा का महत्वपूर्ण केंद्र था वृंदावन, रोचक है पुस्तक

वृंदावन की पुस्तक 'ठौर' के यूरोपियन भी कायल

ऑक्सफोर्ड के प्रोफेसर भी हैं प्रभावित

पीआरआई कर रहा प्रकाशित

वर्ष 3 अंक 193
पृष्ठ 16
मथुरा, सोमवार
26 दिसंबर 2016
नगर
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

सात समंदर पार गोपीचंदन की दीवानगी

विशेष

वर्ष 3 अंक 43
पृष्ठ 20
मथुरा, बुधवार
27 जुलाई 2016
नगर"
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दुनिया जपेगी ब्रज की कंठी, पहनेगी माला

ब्रज वृन्दावन की शैली में कहें तो ' कंठी बन्ध चेला ' मतलब पक्का चेला

वृन्दावनी उपासना से जुड़े साधकों के जीवनवृत्त की मानें तो, वृन्दा के उपवन की कंठी माला, भजन और वृन्दावनी रज का मस्तक पर तिलक ही साधकों के जीवन का ध्येय रहा है ..

मोहि वृंदावन रज सौं काज ।
माला मुद्रा स्याम वंदिनी,
तिलक हमारौ साज ॥ ...

– हरिराम व्यास जी

ब्रज की कंठी–माला 84 कोस की परिधि पार कर न केवल अखिल भारतीय स्तर प्रसारित हुई है बल्कि आज इसकी माँग यूरोप तक है। वास्तव में वृन्दावन की इस वृन्दा की महत्ता तब और अधिक बढ़ जाती है जब सात समुन्दर पार यूरोपियन वैष्णवों के कंठ में वृन्दावन की यह वृन्दा श्रद्धा से सुशोभित दिखती है।

डॉ.राजेश शर्मा

दैनिक जागरण

परंपरा | गुरु और शिष्य के बीच आज भी कर रही सेतु का काम

कंठी की डगर को संस्कारों से सींचा

वृंदावन में माला की दुकान पर कंठी पंसद करते श्रद्धालु● जागरण

जागरण संवाददाता, मथुरा: ब्रज के साधकों ने गुरु प्रदत्त कंठी को केवल गले में धारण ही नहीं किया, बल्कि उसे जिया भी है। श्रद्धा के धरातल पर गुरु के द्वारा शिष्य के गले में पहनाने वाली कंठी की डगर पहले इतनी कठिन थी, आज उतनी ही आसान हो गई है। गुरु एवं शिष्य के मध्य सेतु का काम कर रही कंठी के गौरवशाली अतीत और वैष्णव संस्कृति के इस प्रतीक को साधकों ने अपने प्राण और प्रण से सींचा है।

गुरु और कंठी को लेकर ब्रज की लोक परंपरा काफी समृद्ध दिखती है। दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु और इसी के साथ हर बात के संबोधन में गुरु यहां की सांस्कृतिक परिवेश में इस पवित्र शब्द की महत्व को एक अनूठे अंदाज में आज भी अभिव्यक्त कर रहा है। कंठी के इस जटिल मार्ग का अनुकरण करने वाले साधक इसके मर्म को समझते हैं। जिसमें गुरु की स्थिति सर्वोच्च है और गुरु आज्ञा सर्वोपरि पर है। ब्रज की एक लोकोक्ति गुरु बनावै जानि कै, पानी पीवै छानि कैं कंठी का गौरवशाली स्मरण करा रहा है। वृंदावन शोध संस्थान के डॉ. राजेश शर्मा ने बताया कि कंठी का भी एक इतिहास है। बादशाह जहांगीर के शासनकाल में स्थानीय सूबेदार ने कंठी धारण करने और तिलक लगाने पर प्रतिबंधित लगा दिया। उस दौरान बल्लभकुल के आचार्य गोस्वामी गोकुलनाथजी ने वृद्धावस्था में अपने शिष्य परिकर के साथ कश्मीर में जाकर बादशाह जहांगीर से मिले और दोनों के संबंध में शास्त्रोक्त प्रमाण दिए। इसके बाद जहांगीर ने कंठी-तिलक धारण करने की फरमान दिया था। गोकुलनाथजी का यह कार्य मालोद्धार प्रसंग के नाम से प्रचलित है। ब्रज लोक परंपरा में प्रचलित लोकोक्ति गोकुलनाथ बड़े महाराज तिलक माल की राखी लाज आज भी उनका यशगान करने वाली है। कंठी का एक दूसरा संदर्भ राधाबल्लभ संप्रदाय के उस प्रसंग में मिलता है, जब ब्रज के सूबेदार जयपुर नरेश सवाई जयसिंह और गोस्वामी रूपलालजी के मध्य मतभेद हुए थे। सवाई जयसिंह ने इस संप्रदाय का भाष्य न होने पर कहा था कि ऐसे लोगों को ब्रज में रहने का अधिकार नहीं होगा। गोस्वामी रूपलालजी ब्रज को छोड़ कर चले गए, लेकिन जब भी आए तो राज आज्ञा का उल्लंघन करने को लेकर विवाद हुए। जयसिंह के सैन्यबल के विरोध करने पर एक बार गोस्वामीजी और उनके कंठीबंध शिष्य भी उनके खिलाफ खड़े हो गए थे। 18 वीं सदी के प्रसिद्ध वाणीकार हित वृंदावन दास ने इस विवरण को रुप चरित्र बेली शीर्षक ग्रंथ में भी रेखांकित किया है।

ये न वरजीवौ मान हैं,गुरधर्मी सम्बन्ध।
कौंन-कौंन समझाईये,सब मण्डल कंठी बंध ।।

ब्रज में तुलसी की कंठी श्रद्धा और समर्पण की प्रतीक ही नहीं अपितु गुरू के प्रति निष्ठा और आत्मगौरव का पर्याय भी रही है। इसकी पत्ती और तुलसी की पवित्र रज (मृत्तिका) तथा इस पवित्र विग्रह के काष्ठ से तैयार मनकों को कंठाहार बनाकर यहाँ वैष्णवों ने वृन्दा के प्रति अपने समर्पण को युगों-युगों से दर्शाया है।

- डॉ.राजेश शर्मा

वर्ष 3 अंक 227
पृष्ठ 18
मथुरा, सोमवार
30 जनवरी 2017
नगर
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

गोविंद बाजार का नाम ही बदल गया था लोई के कारोबार से, सर्दी के मौसम में आते थे खरीदार

वृंदावनी लोई हुई बिसरे दिनों की बात

दैनिक जागरण
सबरंग
कला-संस्कृति, खानपान, आस्था सहित विभिन्न क्षेत्रों में ब्रज की अपनी अलग पहचान है। सबरंग में ब्रज के सब रंग समेटने की कोशिश की गई है। आप चाहते हैं कि लोग आपकी अनुभूति को जानें तो हमें इस ई-मेल आइडी sabrang@agr.jagran.com पर भेजें।
शुक्रवार, 6 अप्रैल 2018

कान्हा के अनूठे भक्त

स्वामी दामोदर को खुद दर्शन देने आईं यमुना मैय्या

ब्रज की बात आती है तो सामने होते हैं कान्हा, जेहन में होती हैं उनकी लीलाएं। उनकी कर्मभूमि से जुड़े अन्य संस्मरण खुद ही दिलोदिमाग पर छाने लगते हैं और मन मुरलीधर में लीन होने को आतुर होने लगता है। भगवान श्रीकृष्ण की भूमि भक्तों की राजधानी कहे जाने वाले वृंदावन में कई ऐसे साधक भी हुए हैं, जिन्होंने अपने आराध्य की सेवा की मिसाल कायम की। स्वामी हरिदास ने इसी भूमि पर संगीत साधना के जरिए ठा. बांकेबिहारी का प्राकट्य किया तो श्रीहित हरिवंश ने राधाबल्लभलालजू की सेवा कर इस भूमि को पवित्रता दी। स्वामी दामोदर दास, उन साधकों में से रहे। जिन्हें नाम से लोग कम जानते होंगे, लेकिन काम से हर कोई वाकिफ होगा। राधाबल्लभीय संप्रदाय के साधक रहे स्वामी जी के बारे में कहा जाता है कि एकबार वे अस्वस्थ हुए तो यमुनाजी खुद उन्हें दर्शन देने आईं, वहीं दूसरी घटना उनके आश्रम में चोरी की हुई। ब्रजवासियों ने चोरों को पकड़कर पिटाई कर दी तो वे व्यथित होकर मानसरोवर चले गए। सबरंग में भक्ति की मिसाल पेश करते भक्तों के बारे में बताती विपिन पाराशर की रिपोर्ट-

17 वीं सदी में वृंदावन आकर हुए थे प्रभु भक्ति में लीन

1687 वि. सं. में 'नेम बत्तीसी' नामक ग्रंथ की रचना की

यमुना किनारे स्थित बड़ा रासमंडल का मुख्यद्वार

17 वीं सदी में वृंदावन आकर प्रभु भक्ति में लीन रहने वाले स्वामी दामोदर दास राधाबल्लभ संप्रदाय के साधक थे। लाल स्वामी के शिष्य स्वामी दामोदर दास वृंदावन की भूमि में रचे बसे ऐसे दुर्लभ साधक थे, इन्होंने विषम परिस्थितियों को समझते हुए विक्रम संवत 1687 में 'नेम बत्तीसी' नामक ग्रंथ की रचना की। जिसमें वे कदम-कदम पर कभी यमुना तो कभी अपने ईष्ट राधाबल्लभलाल और कभी यहां की लता-निकुंजों को साक्षी मानकर यह शपथ लेते दिखाई दिए कि विपरीत परिस्थितियों में भी वे ब्रज-वृंदावन की पवित्र भूमि पर साधनारत बने रहे। बताया जाता है कि राधावल्लभ की साधना से फूलों को विसर्जित करने यह रोज यमुना किनारे जाते थे, एक बार अस्वस्थ होने पर वह चार दिन तक नहीं गए तो यमुना खुद उनकी कुटिया तक चली आईं। यमुना की धार देख लोग बाढ़ समझ परेशान हो उठे, लेकिन उससे पहले ही वह लौट गईं।

चोरी हुई तो अपनाए मिट्टी के पात्र

यह दामोदर स्वामी के जीवन की सादगी और प्रभु के प्रति समर्पण ही था कि एक बार जब उनके घर में चोर आ गए और सारे सामान को बांधकर उसे ले जाने लगे। तभी एक चोर अपने साथी को वहीं खड़ा करके कुछ पोटरी लेकर चल दिया और साथी से कहा मैं अभी आता हूं और हम दोनों फिर पूरा सामान एक साथ ले चलेंगे। उसी समय के साधक भगवतमुदित ने अपनी रचना 'रसिक अनन्यमाल' में लिखा है कि इसी दौरान स्वामी जी की आंखें खुल गईं और उन्होंने स्वयं उठकर एक गठरी उठाते हुए चोर के सिर पर रख दी।

इकली पोट न उठई जाई। तब स्वामी ने आपु उठाई।।

वह जानैं मम संगी आयौ। तिन ही चुप ह्वै बोझ उचायौ।।

अंधेरे में चोर ने उन्हें अपना साथी ही समझा और वह सामान लेकर घर से बाहर निकल गया। बाहर लोगों ने चोरों को देख लिया और उनकी पिटाई कर दी। यह देख स्वामीजी व्यथित हुए और उन्होंने यह तय किया कि अब सामान इकट्ठा नहीं करेंगे। मिट्टी के पात्र एवं दौना-पत्तलों का ही प्रयोग करेंगे।

रासमंडल पर हुआ निकुंज गमन

पांडुलिपियों में संदर्भ बताते है कि चोरी की इस घटना के बाद दामोदर स्वामी जी ने यमुना किनारे मानसरोवर को अपनी भजनस्थली बनाया। जब जीवन के अंतिम समय की आहट हुई तो वह गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु द्वारा प्रगटित रासमंडल पर आए तथा यहां आकर उन्होंने पद गायन करते हुए प्रभु की निकुंज लीलाओं में प्रवेश कर लिया। रचनाकार गोस्वामी जतनलाल ने इस प्रसंग को रसिक अनन्य सार पोथी में लिपिबद्ध किया है-

अंत समय हीं जानि, साज ढंग लाइयौ।
हित के मण्डल जाइ एक पद गाइयौ।।
धर्मिन सौं कहि टेरि कृपा मन राखियौं।
लाल-लाड़िली रूप, अबै तुम भाखियौ।।

रचा प्रचुर साहित्य

वृंदावन शोध संस्थान के द्वारा प्रकाशाधीन पुस्तक स्वामी दामोदर दास और उनका ब्रजभाषा साहित्य पुस्तक का संपादन कर रहे डॉ. राजेश शर्मा बताते हैं कि राधाबल्लभ संप्रदाय के अंतर्गत स्वामी दामोदर ने 17वीं सदी में प्रचुर साहित्य रचा गया। जिसका अधिकतर अंश आज भी अप्रकाशित है। डॉ. शर्मा बताते हैं नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में इनके द्वारा सृजित 8 ग्रंथों एवं पत्रावलियों की जानकारी मिलती हैं वहीं ह्वल ही में इनके द्वारा सृजित 18 ब्रजभाषा ग्रंथ खोजे गये हैं जो हिन्दी साहित्य के लिये एक नई उपलब्धि है।

संत साधकों की रहनि-सहनि पर केन्द्रित उनकी कथायें सनातनी परंपरा की दुर्लभ निधि हैं। कान्हा के अनूठे भक्तों की गाथा के रूप में दैनिक जागरण का यह सद्प्रयास वास्तव में भक्तमाल की समृद्ध परंपरा रूपी उस पवित्र महायज्ञ की पूर्व पीठिका है जिसमें प्रथम आहूति देने वालों में भक्तमाल के अमर रचनाकार नाभा जी का नाम प्रमुखत: उल्लेखनीय है। वास्तव में भक्तों के चरित्र लेखन के रूप में नाभा जी के इस प्रयोग ने ब्रजभाषा साहित्य में जिस विधा का बीजवपन किया उससे प्रेरित होकर अलग-अलग कालक्रमों में सगुण तथा निर्गुण दोनों परम्पराओं के अन्तर्गत इस विधा पर केन्द्रित प्रचुर साहित्य रचा गया। जिसने भारतीय आमजन के मध्य पिछले सैंकड़ों वर्षों से मानवीय मूल्यों का प्रत्यक्ष-साक्षात्कार कराया है। यह भक्तों की जीवन शैली का उत्स है कि हमारे साधक-आचार्यों ने भक्तों को भगवान का ही स्वरूप मानते हुए कहा है-

भक्ति भक्त भगवंत गुरू,
चर्तुनाम वपु एक।
इनके पद वंदन किये नासहु
विघ्न अनेक।।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
29-7-2016
www.livehindustan.com

वृंदावन के गोमा टीले पर थी भागवत की प्रथम पाठशाला

- राम भक्ति ही नहीं, कृष्ण को भी गाया तुलनी ने...
- तुलसी मस्तक नवत है, धनुष बाण ल्यौ हाथ...

अमर उजाला

हरियाणा | दिल्ली | चंडीगढ़ | पंजाब | उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर | **आगरा** | बुधवार | 10 अगस्त 2016 | वर्ष 63 अंक 115 पृष्ठ 22 मूल्य ₹ 3.00 या ₹ 4.00 उड़ान सहित

...तुलसी लखि रुचि दास की, कृष्ण भए रघुनाथ

उत्तर प्रदेश
www.amarujala.com
अमर उजाला
आगरा | शनिवार | 27 अगस्त 2016

पहलवानों पर भारी पड़ेगी लट्ठे की 'चुनौती'

श्रीरंग मंदिर में वृंदावन का प्रसिद्ध लट्ठे का मेला आज, 25 फुट के चिकने लट्ठे पर चढ़ते हैं पहलवान

चुनौतीपूर्ण है लट्ठे पर चढ़ना

- ब्रज में खास है कार्तिक
- हर अंचल के विशेष ने बनाया ब्रज के कार्तिक को खास

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
सोमवार, 12 नवंबर 2018, आगरा, पांच प्रदेश, 21 संस्करण
मथुरा संस्करण www.livehindustan.com

कार्तिक मास में वृंदावन बना वैश्विक ग्राम

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
www.livehindustan.com

कार्तिक माह में आकर्षण का केंद्र बना वृंदावन

दैनिक जागरण
सबरंग
कला-संस्कृति, खानपान, आस्था सहित विभिन्न क्षेत्रों में ब्रज की अपनी अलग पहचान है। सबरंग में ब्रज के सब रंग समेटने की कोशिश की गई है। आप चाहते हैं कि लोग आपकी अनुभूति को जानें तो हमें इस ई-मेल आइडी sabrang@agr.jagran.com पर भेजें।
शुक्रवार, 5 जनवरी 2018

किसी ने बणी-ठणी कहा तो किसी ने इण्डियन मोनालिसा, कम लोग जानते हैं कि 18वीं सदी के दौरान वृन्दावन में साधनारत इस सौन्दर्य-सामग्री का एक नाम रसिक बिहारी भी था। इनके द्वारा सृजित ब्रजभाषा साहित्य, बणी- ठणी की उस विशेषता का परिचायक है जिससे आज कम लोग ही परिचित है। पाण्डुलिपियों के रूप में जीवन्त इनके काव्य कौशल की स्मृतियाँ आज भी वृन्दावन शोध संस्थान के साथ ही देश के विभिन्न ग्रंथागारों में संरक्षित हैं।

भारतीय मोनालिसा थीं बणी-ठणी

इतिहास

नई पीढ़ी इससे अनभिज्ञ ही होगी कि भारतीय मोनालिसा के रूप में बणी-ठणी को माना गया है। सौंदर्य के लिए यह जितनी प्रसिद्ध थीं, उतनी ही साहित्य सृजन में भी ख्यातिलब्ध। वृंदावन वास के दौरान उन्होंने रसिक बिहारी उपनाम से ब्रजभाषा में काव्य सृजन भी किया। वे भारत के पिकासो कहे जाने वाले किशनगढ़ के महाराज सावंत सिंह की रक्षित थीं और उन्होंने अपनी अंतिम सांस वृंदावन में ही ली। इनके बारे में विस्तार से बताती वृंदावन से रसिक शर्मा की रिपोर्ट-

ब्रज की अल्पज्ञात देवालयी शब्दावली पर शोध कर रहीं शोध अध्येता प्रगति शर्मा बताती हैं कि रसिक बिहारी छाप से बणी-ठणी के द्वारा रचित ब्रजभाषा साहित्य मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि इनके द्वारा रास, होली, सांझी, हिंडोला एवं कृष्ण लीला से जुड़े विभिन्न पक्षों पर साहित्य का सृजन किया गया।

वृंदावन की दानगली स्थित नागरीदास घेरा में सावंत सिंह (नागरीदास) एवं बणी-ठणी की समाधि

सुंदरता की प्रतिमूर्ति थीं महाराज सावंत सिंह की रक्षित

रसिक बिहारी के नाम से किया ब्रज भाषा में काव्य सृजन

भक्ति साहित्य के सृजन का संस्कार

वृंदावन शोध संस्थान में ब्रज संस्कृति विश्वकोष के सह-संपादक डॉ. राजेश शर्मा बताते हैं कि वृंदावन में आकर बणी-ठणी रसिक बिहारी मंदिर से प्रभावित हुईं। स्थानीय साहित्यकार गोपाल राय ने इस सन्दर्भ का उल्लेख अपनी रचना वृंदावन धामानुरागावली में किया है। इनके द्वारा रचित ब्रजभाषा साहित्य में रसिक बिहारी की छाप देखने को मिलती है-

रतनारी हो थारी आंखड़ियां।
प्रेम छकी रस बस अलसारणी,
जाणी कमाल पांखड़ियां।
सुंदर रूप लुभाई गति मति हो गई,
ज्यूं मधु मांखड़ियां।।
रसिक बिहारी वारी प्यारी, कौन बसि
निसि कांखड़ियां।।

लेखनी की भी धनी थी बणी-ठणी

नागरीदास बन ब्रज साहित्य को संवारा सावंत सिंह ने

राजस्थान के किशनगढ़ के महाराजा सावंत सिंह ने वृंदावन आने पर अपना नाम नागरीदास रख लिया। किशनगढ़ शैली राजस्थान की एक चित्र शैली है, लेकिन बणी-ठणी चित्रशैली का सर्वाधिक प्रचार और विकास महाराजा सावंत सिंह के शासन काल में हुआ। किशनगढ़ शैली का समृद्ध काल सावंत सिंह से है, जो नागरीदास के नाम से विख्यात रहे। नागरीदास के रूप में इन्होंने वृंदावन में ब्रज संस्कृति से प्रेरित साहित्य, संगीत और कला में अपना अतुलनीय योगदान दिया। इन्होंने अपने लिखे पदों के आधार पर न अपने दरबारी चित्रकारों के माध्यम से केवल चित्रों की रचना कराई बल्कि उन्हें संगीतबद्ध भी किया। वहीं वृंदावन के ब्रह्मकुंड पर सांझी मेला के संरक्षक के रूप में इनका नाम उल्लेखनीय है। तत्कालीन सांझी मेले के दौरान जहां नागरीदास के निर्देशन में सांझी बनाई जाती, वहीं उनके लिखे काव्य का गायन भी होता था।

जारी किया था डाक टिकट

किशनगढ़ महाराज के दरबार में बने बणी-ठणी के चित्र ने अपने जमाने में खासी लोकप्रियता हासिल की, जिसके चलते इस चित्रशैली को बणी-ठणी के नाम से भी जाना गया। वर्ष 1955 से 57 के मध्य भारत सरकार ने इसके ऊपर डाक टिकट जारी किया।

वर्ष 3 अंक 241
पृष्ठ 16
मथुरा, सोमवार
13 फरवरी 2017
नगर
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

बनी ठनी ने रची थी प्रेम की नई परिभाषा

किशनगढ़ के महाराज सावंत सिंह और दासी बनी ठनी की अमर प्रेमकथा

भारत की मोनालिसा कही जाती है बनी ठनी

वैलेंटाइन वीक पर विशेष

दैनिक जागरण
विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

अधूरी नहीं रहेगी अंतिम हिंदू सम्राट की गौरवगाथा

वर्ष 1 अंक 108
पृष्ठ 20+6=26
रेवाड़ी, शुक्रवार
9 जून 2017
रेवाड़ी
मूल्य ₹ 4.00

दैनिक जागरण

9-6-2017
विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

अलवर व रेवाड़ी से मजबूत सांस्कृतिक संबधों का गवाह है वृंदावन

मथुरा, शुक्रवार
9 मार्च 2018
नगर*
मूल्य ₹ 3.00
पृष्ठ 22

दैनिक जागरण

दैनिक जागरण
सबरंग

कला-संस्कृति, खानपान, आस्था सहित विभिन्न क्षेत्रों में ब्रज की अपनी अलग पहचान है। सबरंग में ब्रज के सब रंग समेटने की कोशिश की गई है। आप चाहते हैं कि लोग आपकी अनुभूति को जानें तो हमें इस ई-मेल आइडी sabrang@agr.jagran.com पर भेजें।

ब्रह्मोत्सव पर विशेष

उत्तर भारत का प्रथम दिव्य देश वृंदावन का रंगजी मंदिर

भगवान नारायण के लोक को दिव्य देश की संज्ञा दी गई है। दिव्य देश की पहचान पांच प्रमुख 'स्तंभों' से है। इसकी पूर्णता को मंदिर परिसर में गरुण स्तंभ, गोपुरम, पुष्करणी, पुष्प उद्यान और गोशाला होना अनिवार्य है। इस अलौकिक महिमा को देखना है तो वृंदावन के रंग जी मंदिर आइए। यह उत्तर भारत का प्रथम दिव्य देश है। मंदिर में छह मार्च से ब्रह्मोत्सव शुरू हो गया है, जो पंद्रह मार्च तक चलेगा। बारह मार्च को रथ की सवारी विशेष आकर्षण होगी। प्रस्तुत है वृंदावन से विपिन पाराशर की एक रिपोर्ट:

वृंदावन स्थित रंगजी मंदिर दिव्यदेश की पहचान का प्रमुख बिंदु गोपुरम

प्रमुख बिंदु पुष्करणी

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का दर्शन करवाते मंदिरों की नगरी वृंदावन में दक्षिण भारतीय संस्कृति का रंगजी मंदिर भी प्रमुख पहचान बनाए हुए है। चारों ओर से गौड़ीय वैष्णव संप्रदायों के बीच रामानुज संप्रदाय की पताका फहरा रहे इस मंदिर निर्माण का श्रेय भले ही श्रीरंगदेशिक स्वामी को जाता हो, मगर मंदिर निर्माण में मथुरा के सेठ लक्ष्मीचंद और उनके भाइयों की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता। तन, मन और धन आचार्य रंगदेशिक स्वामीजी को समर्पित कर तीनों भाइयों ने उनकी वृंदावन में श्रीगोदा देवी जी को रंगमन्नार के साथ ब्रज में प्रतिष्ठित करवाने की इच्छा पूरी की।

रंगजी मंदिर के अभिलेखों में दर्ज है कि चेन्नई के अगरम गांव निवासी श्रीरंगदेशिक स्वामीजी का जन्म विक्रम संवत 1866 को कार्तिक कृष्ण सप्तमी को हुआ। युवा अवस्था में ही वे उत्तर भारत की यात्रा करते हुए गोवर्धन पहुंचे। वहां वैष्णव संप्रदाय के गोवर्धन पीठाध्यक्ष स्वामी श्रीनिवासाचार्य के अनुगत हो वैदिक सनातन धर्म के प्रचार में जुटे। इसी दौरान उनकी मुलाकात मथुरा के सेठ लक्ष्मीचद, राधाकृष्ण और गोविंद दास से हुई। लक्ष्मीचंद को छोड़कर दोनों भाई राधा कृष्ण और गोविंद दास वैष्णवाचार्य श्रीशठकोप स्वामी की प्रेरणा से वैष्णव संप्रदाय के आचार्य रंगदेशिक स्वामी के तपोमय जीवन से प्रभावित हुए और उनके शिष्य बने।

स्वामीजी ने दोनों को दीक्षित कर दक्षिण यात्रा करवाई। उसी समय श्रीगोदादेवी को रंगमन्नार के साथ ब्रज में प्रतिष्ठित करने की अपनी इच्छा भी जता दी। बस, यहीं से श्रीरंगमंदिर के निर्माण का सूत्रपात हुआ, जिसकी पूर्ति के लिए सेठ लक्ष्मीचंद, राधाकृष्ण और गोविंदकृष्ण ने अपना तन, मन और धन स्वामीजी के चरणों में समर्पित कर दिया। श्रीस्वामी रंगदेशिक ने सेठ भाइयों के दिए गए विपुल धन से संवत 1890 सन 1833 में यानि करीब 185 साल पहले मंदिर का निर्माण आरंभ करवाया। इसमें तोताद्रि स्वामी की अगुवाई में श्रीगोदारंगमन्नार भगवान का मूल विग्रह व उत्सव मूर्ति तथा श्री गरुड़, श्रीसुदर्शन, श्रीविष्वकसेन, श्रीवेणुगोपाल आदि भगवान की बड़े समारोह के साथ प्रतिष्ठा की। तब से बराबर पांचरात्र आगम विधि से भगवान की सेवा होती आ रही है। इसमें उषःकाल, आगमनकाल, समाराधनकाल, इज्याकाल, शयनकाल की सेवा मुख्य है।

वर्तमान में श्रीरंगजी मंदिर रामानुज संप्रदाय के उत्कर्ष में सहभागी होते हुए धर्म प्रचार में संलग्न है। वर्तमान पीठाधीश्वर स्वामी गोवर्धनरंगाचार्य महाराज पूर्ण निष्ठा से सभी कार्य समयानुसार संपन्न करवाने में तत्पर रहते हैं।

यूरोपियन भी दीवाने

मेले की रौनक जितनी आज है, यही परिदृश्य पूर्व में भी अपने ही अंदाज में था। बढ़ती आबादी से जनसंख्या में भले ही इजाफा हुआ हो। नहीं बदली तो इस मेले की लोकप्रियता। रथ के मेले ने स्थानीय लोग ही नहीं, ग्रामीण व सुदूर क्षेत्र के श्रद्धालु और यूरोपियनों को आकर्षित किया। ब्रिटिश काल में रथ के मेले का आकर्षण ऐसा था कि ब्रिटिश अफसर भी मेले का नजारा लेने आए। रंगजी मंदिर वृंदावन का श्रीब्रह्मोत्सव पुस्तक के लेखक डॉ. राजेश शर्मा बताते हैं कि इस मेले में कभी भरतपुर महाराज का सैनिक दस्ता और बैंड का प्रदर्शन करता था। स्थानीय तीर्थ पुरोहित परिवार की पुस्तैनी बहियां भी इसकी लोकप्रियता की साक्षी हैं। आजादी से पहले रजवाड़े भी इस ब्रह्मोत्सव को देखने आते थे। विक्रम संवत 1981, सन 1924 में अशोथर जिला फुलेपुर रियासत के राजा अपने बिल्लेदार सहित ब्रह्मोत्सव देखने आए। इसका विवरण कालीय मर्दन मंदिर के सेवायत उमाशंकर पुरोहित की पुस्तैनी बहियों में दर्ज है। बीसवीं शताब्दी में बुंदेलखंड के प्रतापी राजा छत्रसाल बुंदेला की परिवर्ती पीढ़ी में रानी कमल कुंवरि ने भी इसका उल्लेख अपनी वृंदावन यात्रा के दौरान किए गए विवरण में किया है।

उत्सव ब्रज की पहिचान हैं या ब्रज की पहिचान उत्सव। वास्तव में इन दोनों बातों के बीच की परिचर्चा ही ब्रज संस्कृति की उत्सवधर्मिता के महत्व को रेखांकित करने वाली है। ब्रजमंडल में विश्व प्रसिद्ध होली के तुरंत बाद वृंदावन में उत्तर भारत के प्रसिद्ध एवं पारंपरिक श्री ब्रह्मोत्सव का दस दिवसीय आयोजन यहां रथ कौ मेला के नाम प्रसिद्ध है। जिसे देखने सुदूर क्षेत्रों से लोग यहां आते हैं।

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

रंगनाथ ने मोहिनी रूप में दिए दर्शन

चांदी की पालकी में सवार होकर हाथों में अमृत कलश लेकर भ्रमण के लिए निकले भगवान रंगनाथ

आय गयौ मेला अब रथ कौ, सुन आली री...

देखूँगी सवारी मैं भी, जाय रंगनाथ की ...

वृन्दावन में रंग मंदिर का 'श्रीब्रह्मोत्सव' आज लोक जगत में 'रंगजी कौ मेला' के नाम से प्रसिद्ध हो चला है। रियासती काल में भी इस मेले का आकर्षण इस कदर था कि तत्त्कालीन समय में हर खास व आम श्रद्धा और जिज्ञासा के धरातल पर इसके प्रभाव में रहा। उस दौरान आने वाले यात्रियों के विवरण हों या तीर्थ पुरोहितों की बहियाँ और इसी के साथ लोक भावना में अभिव्यक्त काव्य पंक्तियां सभी कुछ इस मेले की लोकप्रियता के द्योतक हैं। वृन्दावन निवासी गोविन्द शरण जी की यह कविता तो एक जमाने में प्रसिद्ध रही– **आय गयौ मेला अब रथ कौ सुनि आली री, देखूँगी सवारी मैं भी जाय रंग नाथ की .**

..

श्रद्धा और भक्ति के धरातल पर दस दिवसीय श्रीब्रह्मोत्सव के मनोरथ में स्वर्ण एवं रजत निर्मित पारम्परिक वाहनों पर प्रभु की मनमोहक झांकियाँ शुरू से मन मोहती आयीं हैं। जिसमें 5वें दिन रजत–पालकी में विराजमान प्रभु का मोहिनी रूप भक्त के मन को मोहने में समर्थ है। इसी के साथ महाउत्सव में पूर्ण कोठी, सिंह, सूर्यप्रभा, हंस, गरूड़, हनुमान जी, शेष जी, कल्पवृक्ष, सिंह शार्दूल, कांच का विमान, हाथी, रथ की सवारी, अश्व, पालकी, चन्द्रप्रभा एवं पुष्प विमान पर प्रभु की अलौकिक लीलायें देखते ही बनती हैं। जिनके विस्तृत कथानक और आयोजन की पद्धतियां भी हृदयस्पर्शी है....

रंग जी के मेला में, आतिशबाजी चलै करामात की...

नित्योत्सवे नित्य मंगलम् भाव वृंदावन के श्रीरंग मंदिर की सेवा भावना तथा उत्सवधर्मिता के परिचायक है। वृंदावन की पहिचान मंदिर-संस्कृति के धरातल पर पल्लवित हुई। यहाँ श्री रंग मंदिर की ये अपनी विशेषता है कि इसके कुछ उत्सवों ने स्वयं को मेला के रूप अभिव्यक्त किया है, जिसने वृंदावन ही नहीं आस-पास के गाँव तथा इन स्थलों के लोगों से जुड़े रिश्तेदार भी उत्साह से यहाँ सहभागिता करते हैं। श्री ब्रह्मोत्सव के रूप में 'रंग जी कौ मेला' का दस दिवसीय आयोजन आज भी लोगों में स्फूर्ति और उमंग का संचार करना है। इसी क्रम में यह इस अवसर पर आतिशबाजी को देखकर भारतीय ही नहीं, यूरोपियन भी कायल रहे हैं।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
शुक्रवार, 24 मार्च 2017, आगरा, पांच प्रदेश, 20 संस्करण
www.livehindustan.com

ब्रिटिशकाल में भी लोकप्रिय थी रंग मंदिर की आतिशबाजी

संस्कार प्रसाद का –

ब्रज-वृन्दावन- जहां पकवान [Recipe] सिर्फ प्रभु को आरोगने खाने-पकाने, स्वाद और आयोजनों में इसके दर्शन-प्रदर्शन मात्र की विषयवस्तु नहीं, अपितु श्रद्धा के धरातल पर पांडुलिपियों के रुप में पीढी दर पीढी इसके लेखन और गायन से यहाँ पल्लवित हुई, प्रसाद की व्यापक संस्कृति ...

जहां पाया ही नहीं, गाया भी जाता है प्रसाद

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

गुरुवार, 25 मई 2017, आगरा, पांच प्रदेश, 20 संस्करण

मथुरा संस्करण www.livehindustan.com

प्रसाद के लेखन, गायन ने ब्रज को बनाया खास

वर्ष 4 अंक 84
पृष्ठ 16
मथुरा, गुरुवार
7 सितंबर 2017
नगर*
मूल्य ₹ 2.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

मंदिरों में खुशबू बिखेरेंगी अदभुत सांझी

द्वापर में पितृपक्ष में ब्रज के मंदिरों में शुरू हुई सांझी सजाने की परंपरा, दर्शन को आते हैं दुनिया भर से लोग

जासं, वृंदावन (मथुरा): अब पितृ पक्ष में मंदिरों में ब्रज की प्राचीन परंपरा के तहत सांझी उत्सव शुरू होंगे। सांझी के रंग एक बार फिर से मंदिरों के आहतों में अपनी खुशबू बिखेरेंगे। इसका दर्शन करने को देश दुनिया से हजारों श्रद्धालु आज भी पितृपक्ष में यहां आते हैं।

पितृपक्ष में ब्रज के मंदिरों में सांझी सजाने की परंपरा द्वापर में शुरू हुई तो ब्रजवासियों ने ब्रज संस्कृति में इसे समाहित कर लिया। काल और परिस्थिति के चलते भले ही ये परंपरा मंदिरों में सिमटती नजर आई तो संस्कृति के संवाहकों की चिंता बढ़ना लाजमी था। कुछ परिवारों ने सांझी परंपरा को न केवल संजोये रखा बल्कि इसे नए आयाम देने की भी कोशिश की। आज सांझी परंपरा को एक बार फिर पुराने स्वरुप में सामने लाने के प्रयास तेज हो रहे हैं। ये परंपरा अब मंदिरों से निकल कर कुंज निकुंजों में भी विस्तार पाती दिखाई देगी।

वृंदावन के मंदिरों में पितृपक्ष के दौरान बनने वाली रंगों की सांझी ● फाइल फोटो

सांझी परंपरा का मंदिरों से सैकड़ों साल पुराना नाता हैं। मान्यता है जब श्रीकृष्ण गोचारण करके लौटते तो मार्ग में श्रीराधा अपने सखी परिकर के साथ नाना प्रकार के फूलों से सांझी बनाती थीं। जिसे देख श्रीकृष्ण एवं ग्वाल आनन्दित होते। कालांतर से यह परंपरा मंदिरों में आज तक दिखती है। आरंभ में फूल सांझियां बनाई जाती हैं वहीं रंग एवं पानी के ऊपर तथा नीचे इस कला का अंकन देखते ही बनता है। नगर के राधाबल्लभ, भट्टजी, राधारमण, शाहजहांपुर मंदिर, एवं यशोदानंद मंदिर कला का हुनर आज भी देखा जा सकता है।

राजे-रजवाड़े भी थे प्रभावित

दतिया के राजा राव पारिक्षित सिंह देव जू महाराज ने वृंदावन निवासी हित परमानंद से सांझी की कोठी तैयार करवाई। इनकी सांझी की पोथी दतिया स्टेट की राजकीय लाइब्रेरी में आज भी संरक्षित है। वहीं किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह खुद सांझी के पदों की रचना किया करते थे।

ये बनती हैं सांझी

मंदिरों में बनने वाली सांझी को फूल, रंग, पानी के ऊपर व नीचे कड़ी मेहनत के साथ तैयार किया जाता है। जबकि ब्रज के ग्रामीण अंचल में युवतियां गोबर से सांझी बनाया करती थीं। मगर, समय के बदलाव और आधुनिकता के प्रभाव ने ग्रामीण अंचल में गोबर की सांझी बनना लगभग खत्म ही हो गया है।

साहित्य संगीत एवं कला में व्याप्त सांझी

ब्रज संस्कृति अध्येता डॉ. राजेश शर्मा का कहना है कि ब्रज मंडल में सांझी केवल कला का हुनर मात्र नहीं अपितु साहित्य एवं संगीत में इसकी व्याप्ति ने इसे मुद्रण तकनीकी से पूर्व ही अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया था। यही कारण है कि बुंदेलखंड एवं राजस्थान सहित देश के विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों में सांझी का साहित्य आज भी विद्यमान है। वहीं इस मनोरथ के अवसर पर सांझी की पदावलियों का गायन मंदिरों में देखा जा सकता है।

समय के सापेक्ष राष्ट्रीय ही नहीं , अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार पाया ब्रज की साँझी कला ने ...

साँझी की विविधताओं से उपजे आकर्षण ने इसे लोकप्रियता की ओर उन्मुख किया। जब ब्रज के श्रीविग्रह देश के विभिन्न स्थलों पर विराजित हुए तो ब्रज की यह कला भी वहाँ स्थानान्तरित हुई। यही कारण है कि जयपुर के लाड़िली जी मंदिर राजा श्रीनाथद्वारा दिल्ली के कटरा नील एवं बुंदेलखण्ड के दतिया में साँझी आज भी अपने गौरव के साथ जीवंत है। यही नहीं साहित्य के रूप की अभिव्यक्ति ने एक जमाने में अन्तर्राज्यीय विस्तार पाया। वृन्दावनी उपासना के साधक हित परमानन्द जी की साँझी पोथी विषयक पाण्डुलिपि की पुष्पिका (समापन) से यह जानकारी होती है कि दतिया के राव राजा पारीछत देव जू महाराज ने हित परमानन्द जी से साँझी पोथी तैयार करायी थी। वही राजस्थान की किशनगढ़ रियासत के राजा सावंत सिंह (नागरीदास) ने वृन्दावन निवास करते हुए साँझी विषयक प्रचुर साहित्य रचा।

दैनिक जागरण

श्रीनाथ जी संग श्रीनाथद्वारा पहुंची सांझी

ब्रज की मंदिर तथा लोक संस्कृति में साँझी के रंग भी अनूठे हैं। पितृ पक्ष के दौरान जब देश में मांगलिक आयोजनों की रफ्तार थमी-सी दिखती है, उस दौरान भी उत्सवधर्मी ब्रज की गौधूलिबेला साँझी के अंकन और स्वर लहरियों से गुंजायमान रहती हैं...

वर्ष 3 अंक 96
पृष्ठ 20
मथुरा, सोमवार
19 सितंबर 2016
नगर*
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

मंदिरों तक सीमित ब्रज की प्राचीन सांझी कला

◆ **ग्रामीण अंचल में गोबर की सांझी अब नहीं आती नजर**

जागरण संवाददाता, वृंदावन: ब्रजमंडल पर्व-उत्सवों के लिए विख्यात है। ब्रज की प्राचीन कहावत आठ वार, नौ त्योहार भी इस बात का प्रमाण देती है कि यहां हर दिन कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है। पूरे साल में एक समय श्राद्ध पक्ष का ऐसा आता है कि 15 दिन तक जब दुनियाभर में कहीं कोई पर्व या शुभकार्य नहीं होते, ब्रज में इन दिनों भी पर्व अपने अंदाज में मनाया जाता है।

श्राद्ध पक्ष में इन दिनों ब्रज के मंदिरों में सांझी महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया जाता है। शहरी इलाकों में रंग व फूलों की सांझी बनाई जाती थी और ग्रामीण अंचलों में गोबर से सांझी बनाकर महोत्सव मनाया जाता है, लेकिन बदलते वक्त ने इस सांझी कला को मंदिरों तक ही सीमित कर दिया है। ब्रज के मंदिरों, कुंज और आश्रमों में मिट्टी के ऊंचे अठपहलू धरातल पर रखकर छोटी-छोटी पोटरियों में सूखे रंगों भर उनपर छानते हुए इस कला का चित्रण किया जाता है। आज ठा. राधाबल्लभ मंदिर, राधारमण मंदिर में नित नए तरीके की सांझी बनाई जा रही है। सांझी में चारों ओर रंग-बिरंगे बार्डर के बीच भगवान श्रीराधाकृष्ण की लीलाओं का मनमोहक दर्शन करवाया जा रहा है। सांझी जमीन पर भी बनाई जा रही है तो पानी की परात में पानी के ऊपर तैरती सांझी और पानी के अंदर सांझी का दर्शन कर श्रद्धालु आल्हादित हो रहे हैं।

वृंदावन के मंदिरों में रंगों से उकेरी सांझी, जिसके बीच में भगवान श्रीकृष्ण-राधा की लीलाओं का दर्शन है। दूसरे चित्र में ब्रज के ग्रामीण अंचल में गाय के गोबर से बनाई गई सांझी। जागरण

ब्रज संस्कृति का अंग गोबर सांझी: ग्रामीण अंचलों में ये सांझी गाय के गोबर से बनाई जाती थी। शोध संस्था में संकल्पित पांडुलिपियों के अनुसार ब्रज लोक संस्कृति में गोबर से बनने वाली सांझी में वीरन बेटी का कथानक प्रचलित है, जो पितृ पक्ष में ससुराल से मायके आती है। पूरी कथा के प्रतीक के रूप 16 दिनों तक अलग-अलग अंकन दीवार पर गोबर के द्वारा किए जाते है। समापन पर कोट बनाया जाता है, फूल-पत्ती, रंगीन कागज और कौड़ी आदि से सजाया जाता है। शाम को कुंवारी कन्याएं सांझी का पूजन करती हैं और पारंपरिक गीत गाती है। आज ये परंपरा भी विलुप्त होती जा रही है।

ये आकृतियां बनती है 16 दिन: वृंदावन शोध संस्थान के निदेशक सतीशचंद्र दीक्षित ने बताया कि पांडुलिपियों के अनुसार 16 दिन तक जो आकृतियां गोबर से बनाई जाती हैं उनमें स्वास्तिक, पालकी, तीन तिवारी, पान, दीपक, ओउम, चंद्र-तारे, आठ कली का फूल, खजूर का वृक्ष, गणेशजी, नौका, धनुष-बाण, पट्टा वाली अम्मा, सांझा-सांझी, पान-सुपारी, श्रवण कुमार, सूरज, बीजना और कोट आदि गोबर से अंकित किए जाते है।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
शुक्रवार, 30 सितम्बर 2016, आगरा, पांच प्रदेश, 20 संस्करण www.livehindustan.com

ब्रजवासियों से किशनगढ़ नरेश ने साझा की सांझी

वृंदावन | रासबिहारी पारीक

ब्रजमंडल में सांझी की परंपरा कृष्णकालीन है। 16 वीं शताब्दी के बाद से यह मनोरथ मंदिर और देवालयों में पल्लवित हुआ। आज भी देवालयों में इसका निर्वाह किया जा रहा है। इस परंपरा को 18वीं शताब्दी में राजस्थान किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह (नागरीदास) ने अपने नये प्रयोगों से आमजन तक पहुंचाया।

सांझी परंपरा से प्रभावित राजा सावंत सिंह ने पहली बार इस परंपरा को आमजन के बीच नये ढंग से प्रस्तुत किया। अपने वृन्दावनवास के दौरान उन्होंने सांझी के मेले आयोजित कराए और सांझी की लीलाएं कराईं। संवत 1814 में अपने पुत्र कुंवर

किशनगढ़ नरेश सावंत सिंह (नागरीदास) संत रूप में। ● हिन्दुस्तान

सरदार सिंह को रियासत का राजपाट सौंप वृंदावन में निवास किया। नागरीदास का घेरा जहां इनकी समाधि आज भी इनकी यशगाथा को गाती है। वृंदावन में निवास से पूर्व अपनी ब्रजयात्रा के दौरान इन्हें वृंदावन खूब भाया। इनके द्वारा रचित तीर्थानंद ग्रंथ से यह जानकारी मिलती है।

वृंदावन शोध संस्थान ने जुटाई दुर्लभ सामग्री

वृंदावन। वृंदावन शोध संस्थान के निदेशक सतीशचंद्र दीक्षित का कहना है कि संस्थान के द्वारा ब्रज संस्कृति के दुर्लभ तथा अप्रकाशित संदर्भों का संकलन ब्रज संस्कृति विश्वकोश के अंतर्गत हो रहा हैं। इससे ब्रज के दुर्लभ संदर्भों से परिचित हो सकेंगे।

अमर उजाला

आगरा
शनिवार, 22 सितंबर 2018

अद्भुत है ब्रज का सांझी मनोरथ

राधावल्लभ मंदिर में 25 से सजेगी सांझी

श्रद्धा के धरातल के पर उच्चस्तरीय सांस्कृतिक परिदृश्य स्थापित किया है युग-युगीन फूल बंगला कला ने ...

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
बुधवार, 18 मई 2016, आगरा, पांच प्रदेश, 18 संस्करण
मथुरा संस्करण www.livehindustan.com

फूलबंगले आज भी बोलते हैं सदियों पुरानी शब्दावली

वृन्दावन सोइ रितु प्रगटावे, जोइ-जोइ दंपति के मन भावै ...

वर्ष 3 अंक 296
पृष्ठ 18
मथुरा, सोमवार
10 अप्रैल 2017
नगर*
मूल्य ₹ 3.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

साहित्य ने भी गढ़े फूलबंगला

पहले मंदिर के बगीचों के फूलों से ही सजाया जाता था ठा. बांकेबिहारी का बंगला

भारतविद्या [Indology] की निधि– समाज गायन की

पांडुलिपियां [Manuscripts]और इसके गायन की परंपरा...

वर्ष 3 अंक 322
पृष्ठ 20+4=24
मथुरा, शनिवार
6 मई 2017
नगर
मूल्य ₹ 4.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

समाज गायन में गूंज रहे बधाई के पद

हित हरिवंश महाप्रभु की जयंती पर राधावल्लभ मंदिर में मनाया जा रहा महोत्सव निकाली गई शोभायात्रा

ब्रज की निधि थे श्रीहित हरिवंश महाप्रभु

समभाव की प्रतीक होली

अमर उजाला

अब होली के रंगों में नहीं रही चोबा, अगरू और अरगजा की महक

दैनिक जागरण

मथुरा, शुक्रवार
15 मार्च 2019
नगर
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 20

www.jagran.com

दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

फागोत्सव में झूमते थे मुहम्मद शाह रंगीला

- दिल्ली के सुल्तान ने सदारंग के नाम से की व्रजभाषा में कविता
- किशनगढ़ नरेश सामंत सिंह ने होली पर लिखा फाग विलास

ब्रज की होली का रंग कुछ ऐसा ही लोकमानस से लेकर साहित्य तक यह खूब बिखरा है। दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद शाह रंगीला ने भी होली पर कवित्त लिखे। वह सदारंग के नाम से कविता करता था। हिंदुस्तानी मोनालिसा बणी-धणी के गढ़ने वाले राजा सावंत सिंह ने तो ब्रज के हर स्थान पर होने वाली होली के बारे में लिखा है।

राजदरबारों से जुड़ी ब्रज की होली की ख्याति को बनाये रखने में उन साहित्य साधकों को विस्मृत नहीं किया जा सकता। जिन्होंने पिछले सैंकड़ों वर्शों में इसे पीढी दर पीढी आगे बढ़ाया। अकबर ने अपने दरबार में होली खेलने की परंपरा को शुरू किया। उन्होंने इसे खूब संरक्षित किया और वह खुद भी होली खेला करता था।इसके बाद भी कई मुगल सुल्तानों ने होली के रंगों को जारी रखा। 16 से 19वीं सदी तक होली की ब्रजभाषा साहित्य में उपस्थिति इसे एक महापर्व के रूप में रेखांकित करती है। वैष्णव सम्प्रदाय से जुड़े मंदिरों के साथ ही देश की अलग-अलग रियासतों में भी राजकवियों में होली पर काव्य सृजित होता रहा।

मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला का होली खेलते हुए चित्र

मुगल बादशाह मुहम्मदशाह रंगीला ने सदारंग उपनाम से ब्रजभाषा में रचनाएं की। इसमें उनकी होली विषयक रचनाओं में ब्रज की होली का परिदृश्य दिखता है-

...इक गावत इक बीन बजावत, अबिर गुलाल लिये भर झोरी।
सदारंग बरसत गोकुल में, खेलत नंद किषोरी।।

वहीं आगरा के प्रसिद्ध नजीर अकबरावादी ने अपनी रचनाओं में होली के रंग खूब उड़ेले हैं-

जब फागुन रंग झमकते हों,
अब देख बहारें होली की।
जब डफ के शोर खड़गते हों,
अब देख बहारें होली की।...

18वीं सदी में दिल्ली दरबार का वैभव देख चुके किशनगढ़ नरेश सावंत सिंह साधक के रूप में नागरीदास बन ब्रज की होली के रंग में रंग गये थे। राजा सावंत सिंह वृंदावनी उपासना में रम कर नागरीदास बने और उन्होंने न केवल चित्रकला बल्कि साहित्य में भी ब्रज की होली को उस दौर में संरक्षित किया। होली पर केन्द्रित पद-पदावलियां तथा एक स्वतंत्र ग्रंथ 'फाग विलास' उन्होंने लिखा। उनके दरबारी चित्रकारों के होली विषयक चित्र आज भी ब्रज की उस मनभावन होली की गाथा कह रहे हैं।...

ब्रज ते सोभा फाग की, ब्रज की सोभा फाग।
सब जग में ब्रज फाग कौ, गावत है अनुराग।।

● प्रस्तुति: योगेश जादौन

10वें मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला ने सदारंग उपनाम से अपने इस पद में गोकुल की होली का रंग इस तरह लिखा–

अहो धुन धुकार डफ मृदंग बजत हैं, बिच मुरलीघन घोरी।
चोबा चंदन और अरगजा, केसररंग में बोरी।।
यक गावत यक बीन बजावत, अबिर गुलाल लिये भर झोरी।
सदा रंग बरखत गोकुल में खेलत नंद किशोरी।।

मुगल बादशाहों ने होली को लेकर खूब रुचि दिखाई है। मुहम्मद शाह रंगीला से लेकर बाजिश अली शाह भी होली को लेकर उत्सुक रहते थे। रंगीला ने सदारंग के नाम से होली के पद लिखे।

राजेश शर्मा, वृंदावन शोध संस्थान

मुगलकाल में होली सब पर गालिब थी ...

वर्ष 3 अंक 260
पृष्ठ 20+4=24
मथुरा, रविवार
4 मार्च 2017
नगर
मूल्य ₹ 4.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

ब्रज की होरी के रंगन नै मिटायौ मजहब कौ भेद

पर होरी कौ राजा तौ दाऊ कौ हुरंगा है